पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VIII
Hindi
Specimen copy
Year- 2021-22
Month-August, September

अनुक्रमणिका

क्रम . नंबर	महिना	पाठ / कविता का नाम
1	अगस्त	* पाठ – 7 क्या निराश हुआ जाए * कविता -8 यह सबसे कठिन समय नहीं * कविता- 9 कबीर की साखियाँ * भारत की खोज पाठ -5 * व्याकरण – सर्वनाम , क्रिया , क्रिया विशेषण * लेखन विभाग – चित्र वर्णन , पत्र लेखन , अनुच्छेद
2	सितम्बर	* पाठ-10 कामचोर * व्याकरण – समास * लेखन -विभाग – विज्ञापन तैयार कीजिए * पुनरावर्तन

पाठ -7 क्या निराश हुआ जाए
(लेखक – हज़ारी प्रसाद त्रिवेदी)

* क्या निराश हुआ जाए पाठ सार

लेखक आज के समय में फैले हुए डकैती ,चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार से बहुत दुखी है।आजकल का समाचार पत्र आदमी को आदमी पर विश्वास करने से रोकता है। लेखक के अनुसार जिस स्वतंत्र भारत का स्वप्न गांधी, तिलक, टैगोर ने देखा था यह भारत अब उनके स्वप्नों का भारत नहीं रहा। आज के समय में ईमानदारी से कमाने वाले भूखे रह रहे हैं और धोखा धड़ी करने वालेराजकर रहे हैं। लेखक के अनुसार भारतीय हमेशा ही संतोषी प्रवृति के रहें हैं। वे कहते हैं आम आदमी की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कानून बनाए गए हैं किन्तु आज लोग ईमानदार नहीं रहे। भारत में कानून को धर्म माना गया है,किन्तु आज भी कानून

से ऊँचा धर्म माना गया है शायद इसी लिय आज भी लोगों में ईमानदारी, सच्चाई है। लेखक को यह सोचकर अच्छा लगता है कि अभी भी लोगों में इंसानियत बाकी है उदहारण के लिए वेबस और रेलवे स्टेशनपर हुई घटना की बात बताते हैं।लेखक को विश्वास है की एक दिन भारत इन्ही गुणों केबल पर वैसा ही भारत बन जायेगा जैसा वह चाहता है। अतः अभी निराश न हुआ जाय।

* नए शब्द

1) तस्करी
2) जीविका
3) मनीषियों
4) त्रुटियों
5) ठगी
6) दरिद्रजनों
7) भीरु
8) भ्रष्टाचार

* शब्दार्थ

1) ठगी: चालबाजी
2) तस्करी: चोरी से सीमा पार माल ले जाने की क्रिया
3) भ्रष्टाचार: अनैतिक आचरण
4) सदेंह: शक
5) दृष्टि: नज़र
6) दोष: बुराई
7) गुणी: अच्छाई
8) अतीत: बीता हुआ समय
9) मनीषियों: ऋषि
10) जीविका: रोज़गार
11) निरीह: कमजोर
12) भीरु: डरपोक
13) बेबस: लाचार
14) आस्था: विश्वास
15) संग्रह: इकट्ठा करना
16) उपेक्षा: ध्यान न देना
17) आध्यात्मिकता: भगवान से सम्बन्ध रखने वाला

* सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) इस पाठ के लेखक हैं?
(a) हरिशंकर परसाई
(b) भगवती चरण वर्मा
(c) रामधारी सिंह दिनकर
(d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

2) आजकल समाचार पत्रों में क्या छपते हैं?
(a) ठगी एवं डकैती
(b) चोरी और तस्करी
(c) भ्रष्टाचार
(d) उपर्युक्त सभी

3) प्रत्येक व्यक्ति को किस दृष्टि से देखा जा रहा है?
(a) घृणा की दृष्टि से
(b) प्रेम की दृष्टि से
(c) संदेश की दृष्टि से
(d) मित्र की दृष्टि से

4) कानून की त्रुटियों का लाभ उठाने से निम्नलिखित में से कौन लोग संकोच नहीं करते?
(a) अफ़सर
(b) देशभक्त
(c) धर्म भीरू
(d) युद्धवीर

5) भारतवर्ष में किसके संग्रह को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता?
(a) धन-संपत्ति
(b) लोभ-मोह को
(c) काम-क्रोध को
(d) भौतिक वस्तुओं को

6) चरम और परम किसे माना जाता है?
(a) अकेला व एक सार
(b) अंग्रेज़ी व प्रधान
(c) अग्र व पीछे
(d) इनमें से कोई नहीं

* लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 बुरा आचरण क्या है?

उत्तर - लोभ - मोह, काम - क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विधमान रहतें हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बुरा आचरण है।

प्रश्न-2 भारतवर्ष ने भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व क्यों नहीं दिया है?

उत्तर – भारतवर्ष ने भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है क्योंकि उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है।

प्रश्न-3 आज महान मूल्यों के प्रति हमारी आस्था क्यों हिलने लगी है?

उत्तर - ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले - भाले श्रमजीवी को पिसते और झूठ तथा फ़रेब का रोज़गार करनेवालों को फलता - फूलता देखकर महान मूल्यों के प्रति हमारी आस्था हिलने लगी है।

प्रश्न-4 'मानव महा - समुद्र' से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर – 'मानव महा - समुद्र' से लेखक का आशय भारत वर्ष में रहने वाले विभिन्न जाति एवं धर्म के मनुष्यों से है जो अलग - अलग स्थानों से आए हैं तथा अपने साथ तरह – तरह के जीवन मूल्य एवं आदर्श लाए हैं।

* दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1"आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है।" क्या आप इस बात से सहमत हैं?

उत्तर – "आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है।" मैं इस कथन से पूरी तरह सहमत हूँ और उपरोक्त कथन पूरी तरह से सही भी है। आदर्श अर्थात अच्छी आदतें या बातें। जैसे- सच बोलना, धोखा न देना, अपशब्दों का प्रयोग न करना आदि। किन्तु जीवन में छोटी सी परेशानी अथवा कठिनाई के आने पर हम आदर्शो को भूल कर सरलता से मिलने वाले समाधान की ओर आकर्षित हो जाते है तथा उसी ओर बढ़ जाते हैं।

प्रश्न-2 'महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।' इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर –उपरोक्त कथन लेखक के भारतवर्ष के प्रति अच्छे विचारों का प्रतीक है। निरंतर बुराईयों के बीच घिरे रहने के पश्चात भी लेखक निराश नहीं होते बल्कि अपने जीवन में घटनेवाली सच्ची और अच्छी घटनाओं से आशान्वित होकर वे ऐसा मानते हैं कि मेरे भारतवर्ष से महानता, सच्चाई और अच्छाई अभी पूरी तरह से नष्ट नहीं हुई है। अभी भी भारतवर्ष में सच्चे, ईमानदार व्यक्तियों के कारण सच्चाई और अच्छाई जैसे गुण विद्यमान हैं जो की हमारे भारतवर्ष को महान बनाने में सहायक होंगे।

प्रश्न-3 आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं।इस प्रकार समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए।

उत्तर – टीवी चैनल व समाचार पत्रों द्वारा जो 'दोषों का पर्दाफ़ाश' किया जा रहा है वो पहले किसी सीमा तक सही हुआ करता था। परन्तु, आज टीवी चैनलों और समाचार पत्रों की भरमार के कारण उनके बीच में जनमें श्रेष्ठ-दिखाने-की-होड़ ने इसे धंधा बना दिया है। इससे लोग दोनों पक्षों की सच्चाई जाने बिना ही अपनी तरफ़ से दोषारोपण आरम्भ कर देते हैं। इस बात को तनिक भी नहीं सोचते कि इससे किसी के जीवन पर बुरा असर पड़ सकता है। समाचार पत्र और चैनल सिर्फ अपनी T.R.P. का ही ध्यान रखते हैं। सच तो जैसे कुछ होता ही नहीं है।

व्याकरण

* सर्वनाम की परिभाषा

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते है।

सरल शब्दों में- सर्व (सब) नामों (संज्ञाओं) के बदले जो शब्द आते है, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं।

मै, तू, वह, आप, कोई, यह, ये, वे, हम, तुम, कुछ, कौन, क्या, जो, सो, उसका आदि सर्वनाम शब्द हैं।

* सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छ: भेद होते है-

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम
(2) निश्चयवाचक सर्वनाम
(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(4) संबंधवाचक सर्वनाम
(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(6) निजवाचक सर्वनाम

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम:-जिन सर्वनाम शब्दों से व्यक्ति का बोध होता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे- मैं आता हूँ।
तुम जाते हो।
वह भागता है।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम:- सर्वनाम के जिस रूप से हमे किसी बात या वस्तु का निश्चत रूप से बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

उदाहरण : यह मेरी घडी है ।
वह एक लड़का है ।
वे इधर ही आ रहे हैं ।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम:-जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

उदाहरण :
लस्सी में कुछ पड़ा है ।
भिखारी को कुछ दे दो ।
कौन आ रहा है ।
राम को किसने बुलाया है ।
शायद किसी ने घंटी बजायी है ।

(4) संबंधवाचक सर्वनाम:-जिन सर्वनाम शब्दों का दूसरे सर्वनाम शब्दों से संबंध ज्ञात हो तथा जो शब्द दो वाक्यों को जोड़ते है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहतेहै।

जैसे- जो, जिसकी, सो, जिसने, जैसा, वैसा आदि।
जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम :-जो सर्वनाम शब्द सवाल पूछने के लिए प्रयुक्त होते है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे- कौन, क्या, किसने आदि।
टोकरी में क्या रखा है ?
बाहर कौन खड़ा है ?

तुम क्या खा रहे हो ?

(6) निजवाचक सर्वनाम:-'निज' का अर्थ होता है- अपना और 'वाचक' का अर्थ होता है- बोध (ज्ञान) कराने वाला अर्थात 'निजवाचक' का अर्थ हुआ- अपनेपन का बोध कराना।

जैसे- अपने आप, निजी, खुद आदि।

उदाहरण :

उसने अपने आप को बर्बाद कर लिया ।
मैं खुद फोन कर लूँगा ।
तुम स्वयं यह कार्य करो ।
श्वेता आप ही चली गयी ।

लेखन -विभाग

चित्र -वर्णन

यह चित्र दीपावली के त्योहार का है। यह त्योहार खुशियों का प्रकाश का त्योहार कहलाता है। चित्र में एक घर है जिसके सामने एक पंक्ति में दिए जल रहे हैं। घर के सामने एक बड़ा-सा मैदान है जहाँ बच्चे दीवाली का त्योहार मनाते दिखाई दे रहे हैं। दो बच्चे एक-दूसरे को मिठाई खिला रहे हैं। पास में एक लड़की खुशी से चहकती हुई मिठाई लेने के लिए हाथ बढ़ा रही है। उनके पीछे एक बच्चा अनार छुड़ाकर उसमें से निकलती रोशनी को देखकर खुश हो रहा है। दो बच्चे (शायद भाई बहन) पटाखे को छुड़ाने की तैयारी में हैं। पूरा चित्र खुशी की झलक दे रहा है।

* गतिविधि – कुदरती दृश्य का चित्र बनाए |

कविता -8 यह सबसे कठिन समय नहीं
(लेखक – जया जादवानी)

* कविता का सार

उपर्युक्त कविता में कवयित्री कहती है कि अभी सबसे कठिन समय नहीं है क्योंकि अभी भी चिड़िया तिनका ले जाकर घोंसला बनाने की तैयारी में है। अभी भी झड़ती हुई पत्तियों को सँभालने वाला कोई हाथ है अर्थात अभी भी लोग एक दूसरे की मदद के लिए तैयार है। अभी भी अपने गंतव्य तक पहुँचने का इंतजार करने वालों के लिए रेलगाड़ियाँ आती हैं। अभी भी कोई कहता है जल्दी आ जाओ क्योंकि सूरज डूबने वाला है। अभी भी बूढी नानी की सुनाई कथा आज भी कोई सुनाता है कि अंतरिक्ष के पार भी दुनिया है। अतः अभी सबसे कठिन समय नहीं आया है।

* नए शब्द

1) गंतव्य 2) प्रतीक्षा
3) झरती 4) तिनका
5) हिस्सा

* शब्दार्थ

1) कठिन: मुश्किल
2) तिनका: लकड़ी का छोटा टुकड़ा
3) झरती: गिरना
4) थामने: पकड़ना
5) गंतव्य: जिस स्थान पर पहुंचना होता है

6) प्रतीक्षा: इंतजार
7) आखिरी: अंतिम
8) हिस्सा: भाग
9) सदियों: पुराने समय से
10) खबर: समाचार
11) कठिन: मुश्किल

* सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) कवयित्री के अनुसार यह समय कैसा है?
(a) सबसे कठिन समय है
(b) यह सबसे कठिन समय नहीं है
(c) थोड़ा कठिन समय है
(d) इनमें से कोई नहीं

2) इस कविता के रचयिता कौन हैं?
(a) सुभद्रा कुमारी चौहान
(b) महादेवी वर्मा
(c) जया जादवानी
(d) सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला'

3) तिनका कहाँ है?
(a) पानी में
(b) ज़मीन में
(c) चिड़िया के चोंच में
(d) पेड़ पर

4) सदियों से कहानी कौन सुनाती आ रही है?
(a) बूढ़ी दादी
(b) बूढ़ी नानी
(c) पड़ोसिन
(d) कोई न कोई

5) रेलवे स्टेशन पर क्या है?
(a) रेलगाड़ियों का तांता
(b) यात्रियों की भीड़
(c) ढेर सारा सामान
(d) इनमें से कोई नहीं

6) अंतरिक्ष के पार लोग क्यों गए थे?
(a) घूमने
(b) कुछ नए कार्य करने
(c) नई जानकारियाँ प्राप्त करने
(d) इनमें से कोई नहीं

* अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 'यह कठिन समय नहीं है' कविता की कवयित्री का नाम क्या है?
उत्तर - 'यह कठिन समय नहीं है' कविता की कवयित्री का नाम जया जादवानी है।

प्रश्न-2 'यह सबसे कठिन समय नहीं है' यह पंक्ति हमें क्या संदेश देती है?
उत्तर - इस कविता में कवयित्री ने विषम परिस्थितियों में भी हार न मानने का संदेश दिया है।

प्रश्न-3 'अभी भी एक रेलगाड़ी जाती है गंतव्य तक' का आशय क्या है?
उत्तर 'अभी भी एक रेलगाड़ी जाती है गंतव्य तक' का आशय है कि लेखिका को विश्वास है कि कोई न कोई रेल गाड़ी उन्हें उनके मंजिल तक जरूर पहुँचाएगी।

प्रश्न-4 'झरती हुई पत्ती थामने को बैठा है हाथ एक' से कवयित्री का क्या आशय है?
उत्तर 'झरती हुई पत्ती थामने को बैठा है हाथ एक' से कवयित्री का आशय है कि आज भी समाज में लोग एक-दूसरे की मदद करने को तत्पर रहते हैं।

* लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 'अभी भी स्टेशन पर भीड़ है' इस कथन के द्वारा कवयित्री क्या कहना चाह रही है?
उत्तर 'अभी भी स्टेशन पर भीड़ है' इस कथन के द्वारा कवयित्री यह कहना चाह रही है कि लोग अपने जीवन की कठिनाईयों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रत्यनशील हैं।

प्रश्न-2 चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है? वह तिनकों का क्या करती होगी?
उत्तर – चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में है क्योंकि सूरज डूबने ही वाला है और सूरज डूबने से पहले चिड़िया अपने लिए घोंसला बनाना चाहती है। वह तिनकों से अपने लिए घोंसला तैयार करती है।

व्याकरण

क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है उसे क्रिया कहते है।
जैसे- पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि।
'क्रिया' का अर्थ होता है- करना। प्रत्येक भाषा के वाक्य में क्रिया का बहुत महत्त्व होता है।
अली पुस्तक पढ़ रहा है।
बाहर बारिश हो रही है।
बाजार में बम फटा।
बच्चा पलंग से गिर गया।

1) अकर्मक क्रिया- अकर्मक क्रिया का अर्थ होता है, कर्म के बिना या कर्म रहित। जिन क्रियाओं को कर्म की जरूरत नहीं पडती और क्रियाओं का फल कर्ता पर ही पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - तैरना, कूदना, सोना, उछलना, मरना, जीना, रोना, हँसता, चलता, दौड़ता, होना, खेलना,

उदहारण -

(i) वह चढ़ता है।
(ii) वे हंसते हैं।
(iii) नीता खा रही है।
(iv) पक्षी उड़ रहे हैं।
(v) बच्चा रो रहा है।

2) सकर्मक क्रिया- सकर्मक का अर्थ होता है, कर्म के साथ या कर्म सहित। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों की वजह से कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया होती है।

जैसे -

(i) वह चढाई चढ़ता है।
(ii) मैं खुशी से हँसता हूँ।
(iii) नीता खाना खा रही है।
(iv) बच्चे जोरों से रो रहे हैं।

लेखन विभाग

पत्र लेखन

*** डाकिए की डाक बाँटने के लिए अनियमितता की शिकायत।**

सेवा में
डाकपाल महोदय
अंकुर विहार डाकखाना
लोनी, गाजियाबाद।
विषय – डाकिए की डाक बाँटने की अनियमितता के विषय में पत्र
महोदय
सविनय निवेदन यह है कि हमारे क्षेत्र अंकुर विहार गाजियाबाद में गत पाँच-छह महीने से डाक वितरण अनियमितता से स्थानीय निवासी परेशान हैं।
इस क्षेत्र में प्रतिदिन डाक वितरण नहीं होता। डाकिए सप्ताह में केवल एक या दो बार आते हैं तथा मुहल्ले के गेट पर खड़े चौकीदारों को सभी पत्र थमा कर चले जाते हैं। कई बार पत्र गलत पते पर डालकर चले जाते हैं जिससे और भी अधिक परेशानी उठानी पड़ती है। जरूरी डाक तथा तार समय पर न मिलने से कई लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा तथा कुछ बच्चों के दाखिले भी नहीं हो पाए। ये सभी डाकिए त्योहार पर रुपए माँगने तो आ जाते हैं पर डाक देने नहीं। किसी-किसी ने तो मनी आर्डर की राशि भी पूरी न मिलने की शिकायत की है।
आशा है आप उक्त अनियमितताओं को दूर करने के लिए उचित कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद
भवदीय
आयुष रंजन तिवारी

*** गतिविधि – चिड़ियाँ का घोसला बनाते हुये चित्र बनाए |**

भारत की खोज
पाठ -5 नई समस्याएँ

*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए |**

1) हर्षवर्धन कहाँ पर शासन करता था ?

- हर्षवर्धन उत्तर भारत में शासन करता था |

2) चीनी यात्री हुयान कहाँ पर अध्ययन करते थे ?

- चीनी यात्री हुयान नालंदा में अध्ययन करते थे |

3) सुल्तान महमूद गजनी ने भारत पर कब आक्रमण किया ?

- सुल्तान महमूद गजनी ने भारत पर 1000 ई. के आसपास आक्रमण किया |

4) शाहबुदीन कब दिल्ली की गद्दी पर बैठा ?

- शाहबुदीन 1192 में दिल्ली की गद्दी पर बैठा|

5) औरंगजेब की मृत्यु कब हुई ?

- औरंगजेब की मृत्यु 1707 में हुई |

6) अकबर ने किस धर्म को चलाया?

(a) दीन.ए.एलाही (b) मुस्लिम धर्म

(c) इसाई धर्म (d) फ़ारसी धर्म

7) मराठों के सेना नायक कौन थे?

(a) छत्रपति शिवाजी (b) रणजीत सिंह

(c) टीपू सुल्तान (d) दारा

8) मुगलकाल के पतन के बाद शक्तिशाली शासक के रूप में कौन उभरे?

(a) टीपू सुल्तान (b) हैदर अली

(c) मराठे (d) अंग्रेज़

9) भारत में ईस्ट इंडिया की स्थापना कब हुई?

(a) 1700 (b) 1800

(c) 1600 (d) 1500

कविता -9 कबीर की साखियाँ

* कबीर की साखियाँ का सार

इन दोहों में कबीर मानवीय प्रवर्तियों को प्रस्तुत करते हैं। पहले दोहे में कवि कहते हैं कि मनुष्य की जाति उसके गुणों से बड़ी नहीं होती है। दूसरे में कहते हैं कि अपशब्द के बदले अपशब्द कहना कीचड़ में हाथ डालने जैसा है। तीसरे दोहे में कवि अपने चंचल मन व्यंग कर रहें हैं कि माला और जीभ प्रभु के नाम जपते हैं पर मन अपनी चंचलता का त्याग नहीं करता। चौथे में कहते हैं कि किसी को कमजोर समझकर दबाना नहीं चाहिए क्योंकि कभी- कभी यही हमारे लिए कष्टकारी हो जाता है। जैसे हाथी और चींटी। एक छोटी सी चींटी हाथी को भीबहुत परेशान कर सकती है। पाँचवे दोहे का भाव यह हैं कि मनुष्य अपनी मानसिक कमजोरियों को दूर करके संसार को खुशहाल और दयावान बना सकता है।

* नए शब्द

1) म्यान
2) आवत
3) दिसि
4) सुमिरन
5) दिसि
6) तलि
7) बैरी
8) सीतल

* शब्दार्थ

1) ज्ञान: जानकारी
2) मेल: खरीदना
3) तरवार: तलवार
4) म्यान: जिसमे तलवार रखीं जाती है
5) आवत: आते हुए
6) उलटत: पलटकर
7) फिरै: घूमना
8) जीभि: जीभ
9) मनुवाँ: मन
10) दिसि: दिशा
11) सुमिरन: स्मरण
12) नींदिए: निंदा करना
13) तलि: नीचे
14) खरी: कठिन
15) बैरी: शत्रु
16) सीतल: शांति
17) आपा: स्वार्थ

* सही विकल्प चुनकर लिखिए |

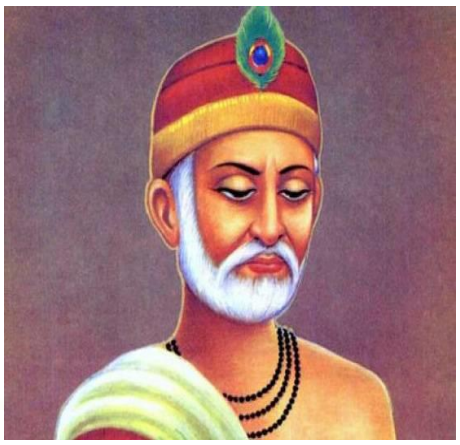

1) साधु से क्या पूछना चाहिए?
(a) जाति (b) धर्म
(c) ज्ञान (d) वाणी

2) कवि किसका मोल करने की बात कह रहा है?
(a) ज्ञान (b) म्यान
(c) तलवार (d) जाति

3) हाथ में हम क्या जाप करते हैं?
(a) दाना (b) मूर्ति
(c) माला (d) राजा

4) कबीर किसकी निंदा न करने की सीख देते हैं?
(a) पड़ोसियों की (b) मित्रों की
(c) कमज़ोर लोगों की (d) जानवरों की

5) कबीर किस काम को बुरा मानते हैं?
(a) निंदा करने को (b) घास खोदने को
(c) पैरों तले होने को (d) किसी को नहीं

6) कबीर के दोहे का संकलन किस रूप में जाना जाता है?
(a) सबद (b) छायावादी
(c) साखी (d) बीजक

* लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेने वाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?

उत्तर - जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय। या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

प्रश्न-2 कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है?

उत्तर – साखी शब्द संस्कृत के शब्द साक्षी का तदभव रूप है। इसका अर्थ है - प्रमाण। साखी में जीवन मूल्य तथा सत्य चित्रण किया गया है। कबीर ने अपने अनुभवों को दोहों के रूप में कहा है। प्रामाणिक होने के कारण ही कबीर के दोहों को साखी कहा जाता है।

प्रश्न-3 कबीर के सखियाँ हमें क्या संदेश देती हैं?

उत्तर - कबीर के सखियाँ हमें यह संदेश देती हैं कि हमें साधु से उनकी जाति न पूछ कर उनसे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। किसी से भी हमें कटु वचन नहीं बोलना चाहिए। ईश्वर की भक्ति हमें स्थिर मन सेकरना चा हिए। हमें अपना स्वभाव शांत रखना चाहिए और सभी को समान भाव से देखना चाहिए।

प्रश्न-4 कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं?

उत्तर कबीरदास जी के अनुसार हमें कभी भी अहंकार वश किसी भी वस्तु को निम्न समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि समय आने पर वही छोटी वस्तु बड़े कष्ट का कारण बन सकती है। हर एक में कुछ न कुछ अच्छाई होती है। अत: हमें सबका सम्मान करना चाहिए।

* दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 'तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं'-उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर - 'तलवार का महत्व होता है, म्यान का नहीं' से कबीर यह कहना चाहता है कि हमें किसी भी वस्तु के आंतरिक गुणों को महत्व देना चाहिए नाकि बाहरी सुंदरता को। उसी प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान उसके गुणों एवं ज्ञान से होती हैं नाकि कुल, जाति, धर्म आदि से। ज्ञान के आगे जाति

का कोई अस्तित्व नहीं है।

प्रश्न-2 पाठ की तीसरी साखी-जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर इस पंक्ति के द्वारा संत कबीर जी कहते हैं कि केवल मुख से हरी का जाप करने से या हाथ में मालाफेरने मात्र से ही ईश्वर का स्मरण नहीं होता है। यदि हमारा मन चारों दिशाओं में भटक रहा है और मुख से हरि का नाम ले रहे हैं तो वह सच्ची भक्ति नहीं है। ईश्वर की सच्ची भक्ति तो मन को स्थिर रखकर भगवान का सुमिरन करते हुए ही संभव है।

व्याकरण

*** क्रिया- विशेषण** - वह शब्द जो हमें क्रियाओं की विशेषता का बोध कराते हैं, वे शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

- दुसरे शब्दों में - जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उन शब्दों को हम क्रिया-विशेषण कहते हैं।
- जैसे - हिरण तेज़ भागता है।
- इस वाक्य में भागना क्रिया है। तेज़ शब्द हमें क्रिया कि विशेषता बता रहा है कि वह कैसे भाग रहा है। अतः तेज़ शब्द क्रिया-विशेषण है।

क्रिया-विशेषण के भेद

i. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के व्यापार के स्थान का पता चले उसे स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, सामने, नीचे, ऊपर, आगे, भीतर, बाहर, दूर, पास, अंदर, किधर, इस ओर, उस ओर, इधर, उधर, जिधर, दाएँ, बाएँ, दाहिने आदि।

उदाहरण -

(i) बच्चे ऊपर खेलते हैं।
(ii) अब वहाँ अकेला मजदूर था।
(iii) तुम बाहर बैठो।
(iv) वह ऊपर बैठा है।

ii. कालवाचक क्रिया-विशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के व्यापार के समय का पता चलता है, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - आज, कल, परसों, पहले, अब तक, अभी-अभी, लगातार, बार-बार, प्रतिदिन, अक्सर, बाद में, जब, तब, अभी, कभी, नित्य, सदा, तुरंत, आजकल, कई बार, हर बार आदि।

उदाहरण -

(i) आज बरसात होगी।
(ii) राम कल मेरे घर आएगा।
(iii) वह कल आया था।
(iv) तुम अब जा सकते हो।

iii. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के परिमाण उसकी संख्या का पता चलता है, उसे परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - बहुत, अधिक, पूर्णतया, कुछ, थोडा, काफी, केवल, इतना, उतना, कितना, थोडा-थोडा, एक-एक करके, जरा, खूब, बिलकुल, ज्यादा, अल्प, बड़ा, भारी, लगभग, क्रमशः आदि।

उदाहरण -
(i) अधिक पढो।
(ii) ज्यादा सुनो।
(iii) कम बोलो।
(iv) अधिक पियो।

iv. रीतिवाचक क्रियाविशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चलता है, उसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे - सचमुच, ठीक, अवश्य, कदाचित, ऐसे, वैसे, सहसा, तेज, सच, झूठ, धीरे, ध्यानपूर्वक, हंसते हुए, तेजी से, फटाफट आदि।

उदाहरण -
(i) अचानक काले बादल घिर आए।
(ii) हरीश ध्यान पूर्वक पढ़ रहा है।
(iii) रमेश धीरे -धीरे चलता है।
(iv) वह तेज भागता है।

लेखन विभाग

अनुच्छेद

समाचार-पत्र : ज्ञान और मनोरंजन का साधन

संकेत बिंदु –

- जिज्ञासा पूर्ति का सस्ता एवं सुलभ साधन
- रोज़गार का साधन
- समाचार पत्रों के प्रकार
- जानकारी के साधन।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अपने समाज और आसपास के अलावा देश-दुनिया की जानकारी के लिए जिज्ञासु रहता है। उसकी इस जिज्ञासा की पूर्ति का सर्वोत्तम साधन है-समाचार-पत्र, जिसमें देश-विदेश तक के समाचार आवश्यक चित्रों के साथ छपे होते हैं। सुबह हुई नहीं कि शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार पत्र विक्रेता घर-घर तक इनको पहुँचाने में जुट जाते हैं। कुछ लोग तो सोए होते हैं और समाचार-पत्र दरवाज़े पर आ चुका होता है। अब समाचार पत्र अत्यंत सस्ता और सर्वसुलभ बन गया है।समाचार पत्रों के कारण लाखों लोगों को रोजगार मिला है। इनकी छपाई, ढुलाई, लादने-उतारने में लाखों लगे रहते हैं तो एजेंट, हॉकर और दुकानदार भी इनसे अपनी जीविका चला रहे हैं। इतना ही नहीं पुराने समाचार पत्रों से लिफ़ाफ़े बनाकर एक वर्ग अपनी आजीविका चलाता है। छपने की अवधि पर समाचार पत्र कई प्रकार के होते हैं।प्रतिदिन छपने वाले समाचार पत्रों को दैनिक, सप्ताह में एक बार छपने वाले समाचार पत्रों को साप्ताहिक, पंद्रह दिन में छपने वाले समाचार पत्र को पाक्षिक तथा माह में एक बार छपने वाले को मासिक समाचार पत्र कहते हैं। अब तो कुछ शहरों में शाम को भी समाचार पत्र छापे जाने लगे हैं। समाचार पत्र हमें देशदुनिया के समाचारों, खेल की जानकारी मौसम तथा बाज़ार संबंधी जानकारियों के अलावा इसमें छपे विज्ञापन भी भाँति-भाँति की जानकारी देते हैं।

*** गतिविधि – संत कबीर का चित्र बनाए अथवा लगाए |**

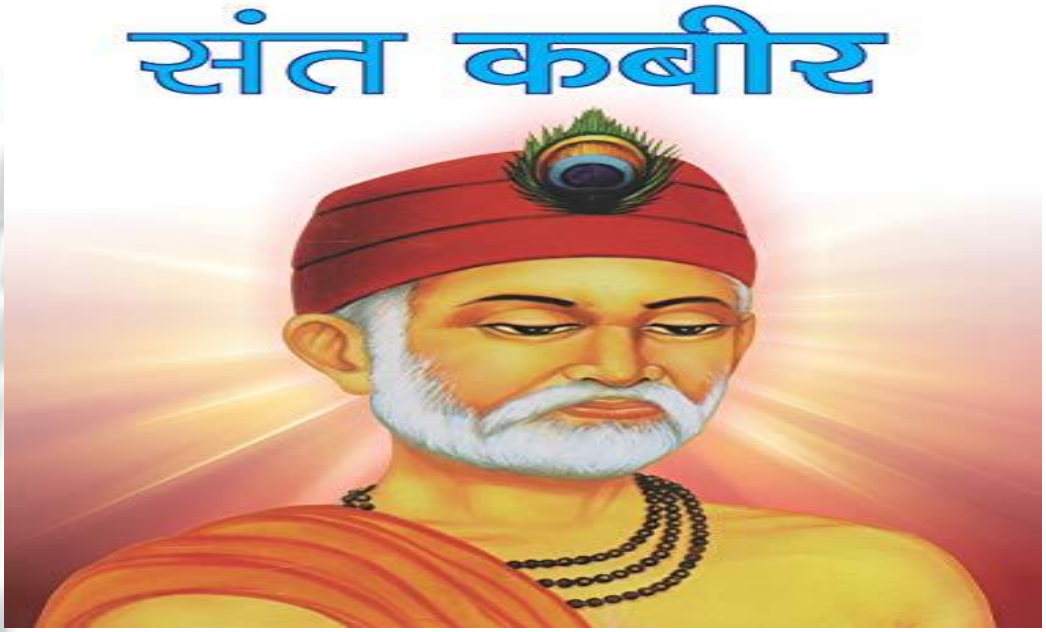

पाठ -10 कामचोर
(लेखिका – इस्मत चुगताई)

* कामचोर पाठ प्रवेश

यह कहानी कामचोर अर्थात् आलसी बच्चों की है। बच्चे अक्सर काम से जी चुराते हैं उन्हें खेलने-कूदने और मस्ती करने में ही आनंद आता है। इस कहानी में बताया गया है कि अगर सही दिशा निर्देश अर्थात् सही तरीका उन्हें न बताया जाए तो बच्चे सही तरीके से काम नहीं करते हैं अर्थात् बच्चों को उन्हें काम करने का तरीका सिखाना बहुत ही जरूरी है। काम सही तरीके से न होने से क्या-क्या परेशानियाँ घरवालों को होती है, इस पाठ में बताया गया है और बहुत ही मजेदार तरीके से बता गया है कि क्या-क्या होता है, जब उन्हें काम करने के लिए कहा जाता है।

* नए शब्द

1) कामचोर 2) ऊधम
3) दबैल 4) घमासान
5) फरमान 6) मिसाल
7) याचना 8) सींके

* शब्दार्थ

1) वाद-विवाद – बहस 2) खुद – अपने आप
3) कामचोर – आलसी 4) ऊधम – मस्ती
5) ख्याल – सोच 6) घमासान – भयानक
7) हरगिज – बिलकुल 8) फरमान – राजाज्ञा
9) दुहाई – कसम 10) याचना – प्रार्थना

* सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) 'कामचोर' कहानी के लेखक कौन हैं?

(a) कामतानाथ (b) भगवती चरण वर्मा
(c) इस्मत चुगताई (d) जया जादवानी

2) आखिर ये मोटे-मोटे किस काम के हैं? ऐसा किन्हें कहा गया है?
(a) नौकरों को (b) पड़ोसियों को
(c) घर के बच्चों को (d) नौकरों को
3) काम करने के लिए कौन तैयार हो गए?
(a) नौकर **(b) घर के बच्चे**
(c) माता-पिता (d) चाचा
4) बच्चों को काम करवाने के लिए क्या लालच दिया गया?
(a) वेतन का (b) नए कपड़ों का
(c) दावत में ले जाने का (d) कहीं दूर घुमाने ले जाने का
5) बच्चों ने कहाँ झाड़ू लगाने का फ़ैसला किया?
(a) घर में **(b) आँगन में**
(c) घर के बाहर (d) उपर्युक्त सभी
6) बच्चे किससे सफ़ाई में जुड़ गए?
(a) सीकों से **(b) झाड़ू से**
(c) पोछा से (d) कपड़ों से

* लघु उत्तरीय प्रश्नों लिखिए |

1) **कहानी में "मोटे-मोटे किस काम के हैं"?किन के बारे में और क्यों कहा गया?**
उ.- कहानी में "मोटे-मोटे किस काम के हैं" बच्चों के बारे में कहा गया है क्योंकि वे घर के कामकाज में जरा सी भी मदद नहीं करते थे तथा दिन भर खेलते-कूदते रहते थे।
2) **बच्चों के उधम मचाने के कारण घर कि क्या दुर्दशा हुई?**
उ-.बच्चों के उधम मचाने से घर की सारी व्यवस्था ख़राब हो गई। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढक गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में धुल, मिट्टी और कीचड़ का ढेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गई। मुर्गे-मुर्गियों के कारण कपड़े गंदे हो गए।
3) "कामचोर "कहानी क्या संदेश देती है?
उ.-यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है की बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार, उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए। जिससे वे बचपन से ही रचनात्मक कार्यों में लगन तथा रूचि का परिचय दे सकें। उनके ऊपर बड़ों की जिम्मेदारी थोपना बचपन को कुचलना है। अतः बड़ों को चाहिए की समझदार बच्चा बनकर बच्चों के बीच रहें और उन्हें सही दिशा प्रदान करें।
4) क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगें ?
उ.- बच्चों द्वारा लिया गया निर्णय उचित नहीं था क्योंकि स्वयं हिलकर पानी न पीने का निश्चय उन्हें और भी कामचोर बना देगा। उन्हें काम तो करना चाहिए पर समझदारी के साथ। बच्चों को घर-परिवार के काम धंधों को आपस में बाँट कर, बड़ों से समझ कर पूरा करना चाहिए। उन्हें अपने खाली समय का सदुपयोग करना चाहिए तथा रचनात्मक कार्यों में मन लगाते हुए परिवार-वालों का सहयोग करना चाहिए।
3) "या तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। "अम्मा ये कब कहा और इसका परिणाम क्या हुआ?
उ.- अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर की हालत को देखकर ऐसा कहा था। जब पिताजी ने बच्चों को घर के काम काज में हाथ बँटाने की नसीहत दी तब उन्होंने किया इसके विपरीत सारे घर को तहस-नहस किया। चारों तरफ़ समान बिखरा दिया, मुर्गियों और भेड़ों को घर में घुसा दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि काम करने के बजाए उन्होंने घर का काम कई गुना बढ़ा दिया जिससे अम्मा जी बहुत परेशान हो गई थीं। उन्होंने पिताजी को साफ़-साफ़ कह दिया कि या तो बच्चों से करवा लो या मैं मायके चली जाती हूँ। इसका परिणाम ये हुआ कि पिताजी ने घर की किसी भी चीज़ को बच्चों को हाथ ना लगाने की हिदायत दे डाली नहीं तो सज़ा के लिए तैयार रहने को कहा।

* दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1) घर के सामान्य काम हों या अपना निजी काम, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें करना आवश्यक क्यों है?

- यह इसलिए भी जरूरी है कि यदि हम अपने घर का काम या अपना निजी काम, नहीं करेंगे तो हम कामचोर बन जाएँगे और दूसरों पर आश्रित हो जाएँगे और ये निर्भरता हमें निकम्मा बना देगी। इसलिए हमें चाहिए कि अपने काम दूसरों से ना करवाकर स्वंय करें अपने काम के लिए आत्मनिर्भर बनें। हमें चाहिए कि हम अपने काम के साथ-साथ दूसरों के काम में भी मदद करें। अपना काम अपने अनुसार और समय पर किया जा सकता है।

2) भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधर पर निर्णय कीजिए।

- यदि सारा-परिवार मिल जुलकर कार्य करे तो घर को सुखद बनाया जा सकता है। इससे घर के किसी भी सदस्य पर अधिक कार्य का दबाव नहीं पड़ेगा। सब अपनी अपनी कार्यक्षमता के आधार पर कार्य को बाँट लें व उसे समय पर निपटा लें तो सब को एक दूसरे के साथ वक्त बिताने का अधिक समय मिलेगा इससे सारे घर में आपसी प्रेम का विकास होगा और खुशहाली ही खुशहाली होगी। इसके विपरीत यदि घर के सदस्य घर के कामों के प्रति बेरूखा व्यवहार रखेंगे और किसी भी काम में हाथ नहीं बटाएँगे तो सारे घर में अशांति ही फैलेगी, घर में खर्च का दबाव बनेगा, घर के सभी सदस्य कामचोर बन जाएँगे और अपने कामों के लिए सदैव दूसरों पर निर्भर रहेंगे जिससे एक ही व्यक्ति पर सारा दबाव बन जाएगा। यदि इन सबसे निपटने की कोशिश की गई तो वही हाल होगा जो कामचोर में घर के बच्चों ने घर का किया था। वे घर की शन्ति व सुःख को एक ही पल में बर्बाद कर देंगे। इसलिए चाहिए कि बचपन से ही बच्चों को उनके काम स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए ताकि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाया जाए और घर के प्रति ज़िम्मेदार भी।

3) बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता-पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार? कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

- अगर बच्चों को बचपन से अपना कार्य स्वयं करने की सीख दी जाए तो बड़े होकर बच्चे माता-पिता के बहुत बड़े सहयोगी हो सकते हैं। वह अगर अपने आप नहा धोकर स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने जुराब स्वयं धो लें व जूते पालिश कर लें, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें तो माता-पिता का बहुत सहयोग कर सकते हैं। यदि इससे उलटा हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता-पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था।

व्याकरण

-समास

समास 'संक्षिप्तिकरण' को समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में समास संक्षेप करने की एक प्रक्रिया है। दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा कारक चिह्नों का लोप होने पर उन दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल से बने एक स्वतन्त्र शब्द को समास कहते हैं। उदाहरण 'दया का सागर' का सामासिक शब्द बनता है 'दयासागर'।

समासों के परम्परागत छः भेद हैं-

1. द्वन्द्व समास
2. द्विगु समास
3. तत्पुरुष समास

4. कर्मधारय समास
5. अव्ययीभाव समास
6. बहुव्रीहि समास

1. द्वन्द्व समास

जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों ही प्रधान हों अर्थात् अर्थ की दृष्टि से दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व हो और उनके मध्य संयोजक शब्द का लोप हो तो द्वन्द्व समास कहलाता है;
जैसे

- माता-पिता = माता और पिता
- राम-कृष्ण = राम और कृष्ण
- भाई-बहन = भाई और बहन
- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
- सुख-दुःख = सुख और दुःख

2. द्विगु समास

जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, द्विगु समास कहलाता है।
जैसे-

- नवरत्न = नौ रत्नों का समूह
- सप्तदीप = सात दीपों का समूह
- त्रिभुवन = तीन भुवनों का समूह
- सतमंजिल = सात मंजिलों का समूह

3. तत्पुरुष समास

जिस समास में पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान हो, तत्पुरुष समास कहलाता है। दोनों पदों के बीच परसर्ग का लोप रहता है। परसर्ग लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के छः भेद हैं

- मतदाता = मत को देने वाला
- गिरहकट = गिरह को काटने वाला
- जन्मजात = जन्म से उत्पन्न
- मुँहमाँगा = मुँह से माँगा
- गुणहीन = गुणों से हीन
- घुड़सवार = घोड़े पर सवार

4. कर्मधारय समास

जिस समास में पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है।
इसमें भी उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे

- कालीमिर्च = काली है जो मिर्च
- नीलकमल = नीला है जो कमल
- पीताम्बर = पीत (पीला) है जो अम्बर
- चन्द्रमुखी = चन्द्र के समान मुख वाली
- सद्गुण = सद् हैं जो गुण

5. अव्ययीभाव समास- जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है। यह वाक्य में क्रियाविशेषण का कार्य करता है; जैसे-

- यथास्थान = स्थान के अनुसार
- आजीवन = जीवन-भर
- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- यथासमय = समय के अनुसार

6. बहुव्रीहि समास- जिस समास में दोनों पदों के माध्यम से एक विशेष (तीसरे) अर्थ का बोध होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे

- महात्मा = महान् आत्मा है जिसकी अर्थात् ऊँची आत्मा वाला।
- नीलकण्ठ = नीला कण्ठ है जिनका अर्थात् शिवजी।
- लम्बोदर = लम्बा उदर है जिनका अर्थात् गणेशजी।
- गिरिधर = गिरि को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण।
- मक्खीचूस = बहुत कंजूस व्यक्ति

लेखन -विभाग

'मोहित' बैग बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

*** गतिविधि –** कहानी के आधार पर एकल परिवार और सयुंक्त परिवार के बीच अंतर लिखिए |